सामाजिक माध्यमों का सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव : एक अध्ययन

अनिल कुमार

सारांश:

तीव्र जनसंचार व्यवस्था के कारण इन्टरनेट दुनिया की अधिकतर आबादी तक अपने पांव पसार चुका है। इन्टरनेट से निकली एक संचार सेवा सोशल मीडिया के रूप में विश्व पटल पर छा गई है। मात्र एक क्लिक से सूचना एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने और पलक झपकते ही किसी सूचना को वायरल बनाने की ताकत सोशल मीडिया में बखूबी नजर आती है। प्रारम्भ में सोशल मीडिया का उद्देश्य समान विचार वाले व्यक्तियों के साथ वार्तालाप करना और मित्रता बनाना था, परन्तु अब इसका दायरा विस्तृत और संभावनाएं व्यापक हो गई हैं। सोशल मीडिया अपने साथ अनेक सांस्कृतिक बदलावों को लेकर आया है। इस शोधपत्र में इन्ही सामाजिक व सांस्कृतिक परिवर्तनों का अध्ययन किया गया है।

महत्वपूर्ण शब्द: ***सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन, सामाजिक माध्यम, सोशल मीडिया।***

प्रस्तावना:

प्रिंट मीडिया के करीब दो हजार वर्ष तक रहे एकाधिकार को 20वीं सदी की कलम विहीन संचार व्यवस्था ने कड़ी चुनौती दी है। मार्शल मैक्लुहान की धारणा के अनुरूप आज पूरी दुनिया 'विश्वग्राम' में परिवर्तित हो चुकी है और इसका पूरा श्रेय सूचना क्रांति को जाता है। सूचना तकनीक प्रणाली के विकास के पश्चात वर्तमान युग ब्लागिंग और सोशल मीडिया के युग में प्रवेश कर चुका है।

सामाजिक मीडिया की लोकप्रियता के चलते पूरी दुनिया में सामाजिक और सांस्कृतिक परम्परों पर विशेष प्रभाव दिखाई दे रहा है। सोशल मीडिया एक ऐसा मंच है जहाँ बिछड़े मित्रों और रिश्तेदारों से सम्बन्ध स्थापित करने, नये रिश्ते स्थापित करने व व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है। अन्य जनसंचार माध्यमों को पछाड़ते हुए इस जन माध्यम नें सूचना को अति तीव्रता प्रदान की है। जन कल्याणकारी सरकारी योजनाओं को जनसामान्य तक पहुँचाने के अतिरिक्त प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिए जनशक्ति को प्रेरित करने हेतु यह माध्यम अपनी शक्ति और पहुँच को कई बार सिद्ध कर चुका है। सोशल मीडिया में प्रसारित सन्देश लोगो के दिल के ज्यादा करीब माना जाता है इसीलिए यह जनता पर अधिक प्रभाव छोड़ता है। रिश्तों की मजबूती व आपसी सामंजस्य स्थापित करने के लिए सामाजिक माध्यमों की अहमियत बहुत बढ़ गई है। रिश्तों की कमजोर होती कड़ियों को जोड़ने के लिए इन जन माध्यमों के योगदान भुलाया नहीं जा सकता।

सोशल मीडिया ने "वैश्विक गांव" के विचार को वास्तविक बनाने में मदद की है, पहली बार संचार सिद्धांतकार मार्शल मैकलुहान द्वारा 1960 के दशक में सामने रखा गया और इक्कीसवीं सदी के निबंधकार थॉमस एल फ्राइडमैन द्वारा 'सपाट दुनिया' के दावों को सामाजिक मीडिया ने सत्य साबित किया। फ्राइडमैन के अनुसार, व्यक्तिगत कंप्यूटर और सूचना के हस्तांतरण में ऑप्टिक केबल ने आधुनिक संचार क्रांति को बल दिया है तथा समय व स्थान की सीमाओं को लगभग समाप्त कर दिया है। वस्तुतः तीव्र सूचना के इस दौर में सोशल मीडिया देश की तस्वीर बदलने वाला एक सक्षम माध्यम साबित हो रहा है।

व्यक्ति की मानसिकता और जीवन शैली को बदलने में सामाजिक मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत जैसे विकासशील देश में सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। ये परिवर्तन हमारी जीवन शैली, संस्कृति और सभ्यता में झलकते है और यही परिवर्तन भविष्य का आधार होते है। आमतौर पर देखा गया है की नए उभरते क्षेत्रों से युवा बहुत आसानी से प्रभावित हो जाते है और सोशल मीडिया ने युवाओं की इस नब्ज को पहचाना और समय की मांग के अनुसार अपने उपकरणों में परिवर्तन करते रहे। परन्तु जैसे जैसे सामाजिक मीडिया में नए आयाम जुड़ते गए वैसे वैसे समाज ने इन परिवर्तनों को अंगीकार किया। सोशल मीडिया ने लोगों के बीच संबंध बढ़ाए और एक ऐसा माहौल प्रदान किया जहाँ

आम व्यक्ति अपने विचार, भावनाएं व ज्ञान को साँझा कर सकते हैं। इस नेटवर्क के जरिये विश्व स्तर पर एक दूसरे जुड़ने के साथ ही एक समाज से दूसरे समाज और एक देश से दूसरे देश तक विचारों व संस्कृतियों का आदान प्रदान हो रहा है। राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संचार के इस आवागमन ने हमारे सामाजिक जीवन पर प्रभाव डाला। इन गतिविधियों ने रचनात्मक को बढ़ावा दिया और इससे सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा मिला। यह व्यवसायों को बढ़ाने में भी मदद करता है तथा विज्ञापन व मार्केटिंग के लिए अवसर प्रदान करता है जो लाखों सशक्त ग्राहकों तक पहुंचता है।

वहीं दूसरी ओर सोशल मीडिया ने सामाजिक जीवन तथा हमारी संस्कृति को नकारात्मक तरीकों से भी प्रभावित किया है। लोग सोशल मीडिया पर जैसा चाहें वैसी सूचनायें प्रेषित कर सकते हैं और इनमे से कुछ अनुचित सूचनायें व अभद्र तस्वीरें हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त लोगों द्वारा राजनीतिक दृष्टिकोण, धर्म, सामाजिक अधिकारों और संस्कृति से संबंधित एक-दूसरे के दृष्टिकोण के बारे में अनर्गल बहस करना भी इस माध्यम पर प्रश्नचिह्न लगाता है। विशेषतौर पर युवा सोशल मीडिया के नकारात्मक तत्वों से ज्यादा प्रभावित हुआ है। शारीरिक गतिविधियों में कमी, परिवार के अन्य सदस्यों से मेलजोल में कमी, पुस्तकों से दूरी व इन्टरनेट पर अधिकतर समय बिताना आदि इसके नकारात्मक परिवर्तनों की ओर संकेत करता है। इस प्रकार सामाजिक मीडिया के कारण समाज में जहाँ सकारात्मक परिवर्तन देखे गए वहीं इसके नकारात्मक संकेतों ने इसकी गरिमा को ठेस पहुंचाई।

पूरे मानव इतिहास में संचार की नई तकनीकों का हमारी संस्कृति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। शुरुआती चरणों में इस तरह के नवाचारों के प्रभाव को नकारत्मक माना गया था। परन्तु समय के साथ इसकी सकारत्मकता को भी सराहा गया। गत वर्षों में एक भिन्न संस्कृति के दर्शन हुए है, यह एकता और भाईचारे की संस्कृति है जो भारतीय समाज का वर्षों से अभिन्न अंग रही है तथा जिसे आधुनिकता के इस दौर में भुला दिया गया था। परन्तु पिछले कुछ वर्षों में भ्रष्टाचार व दुराचर के विरुद्ध चलाये गए अभियानों में युवाओं की भागीदारी यही संकेत करती है कि सोशल मीडिया ने युवाओं को एक नए सांस्कृतिक रूप में संगठित किया है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में एक साथ किसी कुकृत्य के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए सामाजिक मीडिया द्वारा दिए गए सार्वजानिक संचार मंच का महत्वपूर्ण योगदान है।

सांस्कृतिक परिवर्तन के संदर्भ में सोशल मीडिया व्यक्तियों को एक ही समय में कई लोगों के साथ सांस्कृतिक गातिविधियों को साँझा करने की अनुमति देता है। उदाहरण के लिए, फेसबुक एक सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म है जहां किसी एक संस्कृति का व्यक्ति विभिन्न संस्कृतियों के व्यक्तियों के साथ संवाद करते हैं और अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों आदि को साझा करते हैं। युट्यूब भी विभिन्न संस्कृतियों का रंगमंच है जहां दुनिया के विभिन्न हिस्सों के लोग वीडियो के माध्यम से अपने समाज को प्रतिबिंबित करते है।

आज विश्व पटल पर समाज में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं, विशेषकर युवाओं की संख्या नित प्रतिदिन बढती ही जा रही है जो परस्पर संस्कृतियों के मिलन के प्रथम गवाह है। संचार का यह नया रूप सांस्कृतिक परिवर्तन की एक अन्य तस्वीर भी प्रस्तुत करता है, युवा जिनकी उपस्थिति सोशल मीडिया पर सर्वाधिक है, नए उभरते क्षेत्रों व परिवर्तनों से बहुत आसानी से प्रभावित हो जाते हैं, सही या गलत का चिंतन करे बगैर ये सांस्कृतिक परिवर्तन लोगों के मानस पटल पर गहरा असर डालते है। विकसित देशों की संस्कृति के नकारात्मक गुणों को आधुनिक जीवन का गौरव मानकर अपनाने के कारण भारतीय मानसिकता को प्रभावित किया है। समाज में व्याप्त अराजकता व विकृत नैतिकता युक्त आचरण का समावेश होना, बाहरी संस्कृति के अंधाधुन्द अनुनयन व भारतीय परम्परागत संस्कृति में हुए लोप का परिणाम है।

सोशल मीडिया पर अक्सर ऐसी छवियों व चलचित्रों को परोस दिया जाता है जो मूल रूप से संचार की नैतिकता के खिलाफ है, बल्कि यह उन शोषित व पीड़ित की सामजिक छवि और उनके भविष्य के लिए नुकसानदायक हो सकता है, जो पहले से ही अत्यधिक आघात से गुजर रहे हों यह कभी भी भारतीय संस्कृति नहीं हो सकती जो अक्सर सामाजिक मीडिया पर देखने को मिलती है। सोशल नेटवर्किंग के सहारे चाइल्ड पोर्नोग्राफी की अवधारणा के पल्लवन ने बच्चों के कोमल मन पर प्रभावों को लेकर समाज की चिंताएं बढ़ा दी है। सोशल मीडिया द्वारा विभिन्न आकर्षक विज्ञापनों को पॉप अप किया जा रहा है यहां तक कि अगर कोई बच्चा अध्ययन सामग्री की खोज करने की कोशिश करता है, तो ऐसे विज्ञापन उनका ध्यान भटकाने के लिए पर्याप्त हैं। द्वारपाल के बगैर सामाजिक माध्यम हमारी संस्कृति और परम्परा को सार्वभौमिक रूप से प्रभावित कर रहे हैं। परन्तु यह ऐसे संचार उपकरण है जिन्हें अत्यंत सावधानी से उपयोग करने की आवश्यकता है। निश्चित रूप से यह सकारात्मक रूप में उपयोग किए जाने पर अत्यधिक लाभकारी हो सकता है।

साहित्य पुनरावलोकन:

आर. कुमार व डब्लू. अकरम (2017) द्वारा 'ए स्टडी ऑन पॉजिटिव एंड नेगेटिव ऑफ सोशल मीडिया ऑन सोसाइटी' नामक शोधपत्र में मेडिकल और हेल्थ, व्यवसाय , शिक्षा, बच्चों और किशोर पर सोशल मीडिया का प्रभाव प्रस्तुत किया गया है. **कावेरी सुब्रह्मण्यम और पेट्रीसिया ग्रीनफ़ील्ड** (2015) का कहना है कि ऑनलाइन संचार का उपयोग करने से नकारात्मक और सकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव पड़ते हैं, अपने अध्ययन में उन्होंने पाया की कुछ स्कूलों का मानना है कि सोशल मीडिया का छात्रों की शिक्षा के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जबकि अन्य स्कूलों में सोशल नेटवर्क साइटों के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया क्योंकि वे इसे छात्र शिक्षा के लिए नकारात्मक मानते है. **ज्योति सूरज हरचेकर** (2011) द्वारा 'सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव' विषय एक शोध से पता चला है कि कॉलेज के छात्रों सोशल मीडिया से बहुत प्रभावित होते है । सोशल मीडिया आकर्षक है, यह दबाव बनाने का एक अच्छा तरीका भी प्रदान करता है। यह शोध यह भी बताता है कि सोशल मीडिया और शैक्षणिक अध्ययन के बीच संबंधों को बेहतर बनाने के लिए एक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। **वांग, किंग, चेन, वी, वाई यू.** (2011) ने अपने शोध अध्ययन में कॉलेज के छात्रों पर सोशल मीडिया का प्रभाव का आंकलन किया. अध्ययन में पाया गया की फेसबुक कॉलेज के छात्रों के बीच बहुत लोकप्रिय है, छात्र इसका उपयोग तब करते भी करते है जब वे कक्षाओं में होते है।

शोध का उद्देश्य:

उपयोगकर्ता पर सामाजिक माध्यमों के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव को जानना व इसके उपयोग से लोगों के जीवन में आए बदलावों को ज्ञात करना प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है.

शोधविधि:

देवनिदर्शन विधि द्वारा जिला सिरसा (हरियाणा) के सोशल मीडिया के पचास उपयोगकर्ताओं का प्रश्नावली विधि के द्वारा सर्वेक्षण किया गया. नमूना चयन के लिए शहर की प्रमुख 10 कलोनियों से पांच-पांच उतरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि द्वारा किया गया.

आंकड़ा विश्लेषण:

1. सोशल मीडिया का उपयोग करने का मुख्य कारण?

27 प्रतिशत उतरदाताओं ने नए मित्र/रिश्ते बनाने हेतु, 7 प्रतिशत ने व्यापार को बढ़ावा देने हेतु, 23 प्रतिशत ने मनोरंजन वृद्धि, 9 प्रतिशत ने जीवनसाथी का चुनाव करने के लिए, 21 प्रतिशत ने पुराने रिश्तों से दुरी मिटाने हेतु व 13 प्रतिशत ने सामाजिक व सांस्कृतिक विकास हेतु सोशल मीडिया का उपयोग किया.

2. सोशल मीडिया की मित्र सूचि में अपरिचित अथवा अज्ञात लोगों की संख्या?

19 प्रतिशत उतरदाताओं की मित्र सूचि में 5-10 प्रतिशत, 5 प्रतिशत की सूचि में 11-20 प्रतिशत, 2 की सूचि में 21 प्रतिशत से अधिक अपरिचित लोग शामिल है. वहीं 74 प्रतिशत ने माना की उनकी सूचि में सभी लोग परिचित है.

3. आपके मित्रों की सूचि में भारत के किन भौगोलिक क्षेत्रों के लोग सर्वाधिक शामिल है?

64 प्रतिशत उतरदाताओं की मित्र सूचि में उतरी क्षेत्रों से, 6 प्रतिशत की सूचि में पूर्वी क्षेत्रों से, 5 प्रतिशत की सूचि में दक्षिणी क्षेत्रों के, 13 प्रतिशत की मित्र सूचि में हर क्षेत्र से लोग शामिल है. 12 प्रतिशत को ज्ञात नहीं की उनके मित्रों की सूचि में किस क्षेत्र के मित्र सर्वाधिक है.

4. विदेशों से सोशल मीडिया की मित्र सूचि में शामिल लोगों की संख्या?

6 प्रतिशत उतरदाताओं की मित्र सूचि में 5-10 प्रतिशत विदेशी मित्र, 1 प्रतिशत की सूचि में 11-20 प्रतिशत, 21 प्रतिशत से अधिक विदेशी मित्र किसी की मित्र सूचि में नहीं पाया गया वहीं 72 प्रतिशत ने माना की उनकी मित्र सूचि में कोई विदेशी मित्र शामिल नहीं है.

5. किस आयु वर्ग के लोगों से मित्रता/संपर्क स्थापित किया ?

सोशल मीडिया मंच के द्वारा 28 प्रतिशत ने 15-30 आयुवर्ग के, 25 प्रतिशत ने 30-50 आयुवर्ग व 8 प्रतिशत उतरदाताओं ने 50 वर्ष से अधिक आयु वर्ग को अपना मित्र बनाया वहीं 21 प्रतिशत ने आयु को बिना जाने मित्र बनाये.

6. अपनी निजी सोशल मीडिया प्रोफाइल में किस तरह के सामाजिक समूहों का निर्माण किया?

7 प्रतिशत में अपनी निजी प्रोफाइल में जाती,वर्ग या धर्म से सम्बंधित समूह का निर्माण किया, 6 प्रतिशत ने

राजनीतिक समूह का, 15 प्रतिशत ने शिक्षा व ज्ञान समूह का, 35 प्रतिशत ने मनोरंजन समूह, 5 प्रतिशत ने लैंगिग समूह व 32 प्रतिशत ने जागरूकता या विकास की निति से जुड़े समूह का निर्माण किया.

7. सोशल मीडिया के द्वारा किस विचारधारा का समर्थन किया?

सामाजिक व सांस्कृतिक तत्वों का समर्थन करने वाले उतरदाताओं की संख्या 18 प्रतिशत, राजनितिक दलों को समर्थन देने वालों की 7 प्रतिशत, धार्मिक विचारधारा का समर्थन करने वालों की 2 प्रतिशत, शिक्षा, ज्ञान व जागरूकता का प्रसार करने वालों की 27 प्रतिशत वहीं 46 प्रतिशत ने उपरोक्त किसी विचारधारा का समर्थन नहीं किया.

8. सामाजिक माध्यमों के द्वारा अन्य क्षेत्रो की संस्कृति व धर्म को जानने का प्रयास किया?

36 प्रतिशत उतरदाताओं ने इन माध्यमों के द्वारा अन्य क्षेत्रो की संस्कृति व धर्म को जानने का प्रयास किया जबकि 52 प्रतिशत ने ऐसा नहीं किया, वहीं दूसरी ओर 12 प्रतिशत उतरदाताओं ने अन्य क्षेत्रों की संस्कृति जानने के साथ इसे अपनाया भी.

9. सोशल मीडिया का उपयोग करने के पश्चात क्या लाभ हुआ?

29 प्रतिशत उतरदाताओं ने माना की इससे सामाजिक दायरे को विस्तार मिला, 8 प्रतिशत के व्यापार को बढ़ावा मिला, 25 प्रतिशत ने मनोरंजन में वृद्धि का जरिया, 5 प्रतिशत ने इस मंच के द्वारा जीवनसाथी का चुनाव किया वहीं 23 प्रतिशत ने बिछड़े मित्रों या रिश्तेदारों से संपर्क बनाया, 10 प्रतिशत ने उपरोक्त सभी लाभ इस माध्यम द्वारा प्राप्त किये.

10. इस माध्यम के द्वारा आपमें क्या महत्वपूर्ण बदलाव आया?

18 प्रतिशत उतरदाताओं ने माना की इससे उन्हें सामजिक दायित्व का बोध हुआ, 21 प्रतिशत की सामाजिक व सांस्कृतिक भावनाओं को प्रोत्साहन मिला, 13 प्रतिशत का समाज के प्रति सकारात्मक नजरिया बना, 8 प्रतिशत का समाज के प्रति नकारात्मक रवैया बना. 11 प्रतिशत ने अन्यों के रीतिरिवाज व मान्यताओं को अपनाया जबकि प्रतिशत में कोई बदलाव नहीं आया.

11. सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव

26 प्रतिशत ने माना की सोशल मीडिया के उपयोग से शारीरिक गतिविधियों में कमी आई, 9 प्रतिशत ने बताया की परिवार के अन्य सदस्यों से मेलजोल में कमी, 18 प्रतिशत की पुस्तकों से दूरी बनी व इन्टरनेट पर अधिकतर समय बिता, वहीं दूसरी ओर 47 प्रतिशत इसका कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं मानते.

निष्कर्ष:

इस अध्याय के अंत में यह कहना न्यायोचित होगा कि सोशल मीडिया सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन के प्रेरणास्त्रोत बनकर राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। जनसंचार के परम्परागत माध्यमों से तीव्र, डिजिटल दुनिया के प्रमुख अंग के रूप में समस्त पृथ्वी पर संचार की मुक्त धारा के वाहक बनकर आधुनिक मानव जाती को ज्ञान, विचार, अनुभव, मैत्रीभाव व सामजस्य की सौगात प्रदान की। किसी उपकरण का उपयोग कैसे करना है यह उपयोगकर्ता के हाथ में होता है। सही प्रयोग से सकारात्मक प्रतिफल प्राप्त होगा। प्रस्तुत शोध अध्ययन से निम्न परिणाम प्राप्त हुए है-

सर्वाधिक उतरदाताओं ने नए मित्र व रिश्ते बनाने हेतु, पुराने रिश्तों से दुरी मिटाने व एक चोथाई ने सामाजिक व सांस्कृतिक विकास हेतु सोशल मीडिया का उपयोग किया. कुछ युवाओं ने जीवनसाथी का चुनाव करने के लिए भी सोशल मीडिया का चुनाव किया. अधिकतर उतरदाताओं की सोशल मीडिया की मित्र सूचि में ज्यादातर लोग परिचित है इनमें से अधिकतर उतरदाताओं की मित्र सूचि में उतरी क्षेत्रों से मित्र शामिल है, दूसरी ओर कुछ को ज्ञात नहीं की उनके मित्रों की सूचि में किस क्षेत्र के मित्र सर्वाधिक है. काफी कम उतरदाताओं की मित्र सूचि में 5-10 प्रतिशत विदेशी मित्र शामिल है वहीं अधिकतर ने माना की उनकी मित्र सूचि में कोई विदेशी मित्र शामिल नहीं है. सोशल मीडिया मंच के द्वारा अधिकतर लोग केवल युवा वर्ग को अपने मित्रों के रूप में चुनते है वहीं एक तिहाई ने आयु को बिना जाने भी नए मित्र बनाये. काफी कम लोगों ने अपनी निजी प्रोफाइल में जाती, वर्ग या धर्म से सम्बंधित समूह का निर्माण किया वहीं दूसरी ओर सर्वाधिक उतरदाताओं ने मनोरंजन समूह और जागरूकता या विकास की निति से जुड़े सामाजिक समूहों का निर्माण किया।

सोशल मीडिया पर सामाजिक व सांस्कृतिक तत्वों के साथ शिक्षा, ज्ञान व जागरूकता का प्रसार करने वालों वाले उतरदाताओं की संख्या उत्साहवर्धक पाई गयी वहीं अधिकतर किसी विचारधारा का समर्थन नहीं करते. सामाजिक माध्यमों के द्वारा अन्य क्षेत्रो की संस्कृति व धर्म को जानने का प्रयास व इसके साथ अन्य क्षेत्रों की संस्कृति को अपनाने वालों की संख्या सोशल मीडिया के सद्प्रयोग की ओर इंगित करता है. सोशल मीडिया का उपयोग से लोगों के सामाजिक दायरे को विस्तार मिला व कुछ लोगों ने इस मंच के द्वारा जीवनसाथी का चुनाव किया. बिछड़े मित्रों या रिश्तेदारों से संपर्क बनाने के लिए भी अधिकतर उतरदाताओं ने सोशल मीडिया का सहारा लिया। समाजिक मीडिया से सामजिक दायित्व का बोध हुआ व सामाजिक व सांस्कृतिक भावनाओं को प्रोत्साहन मिला, दूसरी ओर सोशल मीडिया के उपयोग से शारीरिक गतिविधियों में कमी, परिवार के अन्य सदस्यों से मेलजोल में कमी, पुस्तकों से दूरी बनी व इन्टरनेट पर अधिकतर समय बिताना सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव माना गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूचि:

1. **Akram W., Kumar R., A Study on Positive and Negative Effects of Social Media on Society, March 2018, International Journal of Computer Sciences and Engineering 5(10)**
2. Harchekar, Jyoti Suraj (2017) Impact of Social Media on Society, (IJERT) Vol. 6 Issue 07, July - 2017
3. Tarek A. & Yasmin Hashem, (2015) The Impact of Social Media on the Academic Development of School Students, International Journal of Business Administration 6(1).
4. Wang, Qingya; Chen, Wei; and Liang, Yu, (2011). The Effects of Social Media on College Students. https://scholarsarchive.jwu.edu
5. Lusk, B. (2010). Digital natives and social media behaviors: An overview. Prevention Researcher, 173(6).
6. Pavica S., Erna H. & Philipp A. R. (2020) Culture and social media: the relationship between cultural values and hashtagging styles, Behaviour & InformationTechnology, 39:7, DOI: 10.1080/0144929X.2019.1611923
7. Sandel, T., & Ju, B. (2019, December 23). Social Media, Culture, and Communication. *Oxford Research Encyclopedia of Communication*. Retrieved 20 Mar. 2021, from https://oxfordre.com/communication/view/10.1093/acrefore/9780190228613.001.0001/acrefore-9780190228613-e-758.
8. Muralidharan S, La Ferle C, Sung Y. (2015). How Culture Influences the "Social" in Social Media: Socializing and Advertising on Smartphones in India and the United States. Cyberpsychol Behav Soc Netw. (6):356-60. doi: 10.1089/cyber.2015.0008. E-pub 2015 May 15.
9. Narasimhamurthy N. (2014). Cultural Impact and Gender on Indian Young Adults in Using Social Networking Sites, International Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Studies (IJIMS), Vol 1, No.7, 113-125, Retrieved from http://www.ijims.com
10. Sachdev, R. (2012). Impact of social networking sites on the youth of india: a Bird's eye view, College of Management Studies Kanpur (UP) India, Retrived from http://aujournals.ipublisher.in/p/55545